७. स्वराज्य का प्रारंभ

शिवाजी महाराज ने अपने साथियों के साथ रायरेश्वर के मंदिर में स्वराज्य स्थापना की प्रतिज्ञा की थी परंतु वह कितना कठिन कार्य था ! दिल्ली का मुगल बादशाह, बीजापुर की आदिलशाही सुलतान, गोआ के पुर्तगाली और जंजीरा का सिद्‌दी-ये चार सत्ताएँ उस समय महाराष्ट्र पर शासन कर रही थीं । इन सत्ताओं का बड़ा दबदबा था । उनके विरुद्‌ध कुछ कहने का साहस किसी में नहीं था । ऐसी कठिन परिस्थिति में शिवाजी महाराज ने स्वराज्य का मंत्र फूँका । कहाँ शत्रु सेना की विशाल शक्ति और कहाँ शिवाजी महाराज के साथियों की अल्प शक्ति ! परंतु शिवाजी महाराज का निश्चय अटल था । उनके अनुष्ठान में ही शक्ति थी ।

तोरणा किला : शिवाजी महाराज को पुणे, सुपे, चाकण और इंदापुर प्रांतों की जागीरदारी मिली थी । इस जागीर के किले बीजापुर के दरबारी अधिकारियों के आधिपत्य में थे । किलों के बिना स्वराज्य कैसा ! किला जिसका, राज्य उसका ! किला हाथ में होने से ही आसपास के प्रदेशों पर शासन किया जाता है । पहाड़ी किला तो राज्य का मुख्य आधार होता है । अतः शिवाजी महाराज ने निश्चय किया कि शीघ्र ही कोई मजबूत किला जीतना चाहिए । शिवाजी महाराज की आँखों के सामने तोरणा किला था । पुणे से दक्षिण-पश्चिम दिशा में चौंसठ किलोमीटर की दूरी पर कानद नामक घाटी में यह किला है । पहाड़ी

तोरणा किला (झुंजार मचान)

किलों में तोरणा किला सबसे अधिक दुर्गम था । तोरणा किले पर दो भारी मचानें थीं । एक 'झुंजार' मचान थी और दूसरी 'बुधला' । मचान का अर्थ है किले की चढ़ाई पर स्वाभाविक दृष्टि से समतल हुए भूभाग की चहारदीवारी । झुंजार मचान अपने नाम की तरह ही जुझारु और लड़ाकू है । किले से नीचे उतरने के लिए एक ही मार्ग है और वह मार्ग झुंजार मचान से है । यह मार्ग बड़ा कठिन है । मार्ग पर चलते समय यदि कोई संतुलन खो दे तो वह सीधे नीचे घाटी में गिर जाता है । तोरणा किले की गणना महाराष्ट्र के सुदृढ़ किलों में की जाती है । किले में तोरणजाई देवी का मंदिर है । इसी से इस किले का नाम तोरणा पड़ा । ऐसा भव्य किला ! परंतु आदिलशाह का उसकी ओर उतना ध्यान नहीं था । किले पर न तो पर्याप्त पहरेदार ही थे और न गोला बारूद । शिवाजी महाराज ने यह देख लिया । वे भी ठीक यही चाहते थे । उन्होंने तोरणा किला जीतकर स्वराज्य का तोरण बाँधने का निश्चय किया ।

स्वराज्य का डंका बजा : चुने हुए मावलों का दल लेकर शिवाजी महाराज कानद की घाटी में उतरे । सभी मावलों के साथ सिंह के साहस तथा हिरन की गति से वे तोरणा किले पर चढ़ गए । मावलों ने शीघ्र ही सभी मुख्य स्थान अपने अधिकार में कर लिए । तानाजी मालुसरे नामक वीर ने द्‌वार पर मराठों का झंडा रोप दिया । येसाजी कंक शिवाजी महाराज का विश्वसनीय और निष्ठावान सहयोगी था । उसने चौकी पर पहरा बिठाया । किला कब्जे में आ गया । सबने शिवाजी महाराज की जयजयकार की । हिंदवी स्वराज्य का हर्षवाद्‌य बजने लगा । नगाड़ों तथा तुरहियों की आवाज सह्याद्रि की घाटियों में गूँज उठी । शिवाजी महाराज ने इस किले का नाम रखा 'प्रचंडगढ़' ।

भवानी माता का आशीर्वाद : तोरणा किले पर शिवाजी महाराज का कामकाज प्रारंभ हो गया । उन्होंने किले का सूक्ष्म निरीक्षण किया । किले पर मराठा किलेदार, ब्राह्मण सबनीस, प्रभु कारखानीस आदि अधिकारियों को नियुक्त किया । सेना में मावले, कोली, रामोशी, महार आदि जातियों-जनजातियों के शूर-वीरों की भर्ती की । स्वराज्य की सेना में जातिभेद, वर्णभेद जैसा किसी प्रकार का भेदभाव नहीं था । किले की मरम्मत शुरू हुई और कितने आश्चर्य की बात ! काम प्रारंभ ही हुआ था कि किले में मुहरों से भरे चार घड़े मिल गए । काम करने वालों को बड़ी खुशी हुई । हर व्यक्ति कहने लगा, 'शिवाजी महाराज पर देवी भवानी प्रसन्न हुई हैं । उन्होंने ही यह धन दिया है ।' बड़े आनंद के साथ मजदूरों ने मुहरों से भरे घड़े शिवाजी महाराज के सामने रख दिए । किसी ने भी मुहरों को हाथ नहीं लगाया । वह स्वराज्य का धन था । उन्होंने उसे अपने स्वामी के सुपुर्द किया । स्वराज्य के कार्य के लिए अचानक इतना धन मिल जाने से शिवाजी महाराज उत्साह से भर उठे । उन्होंने यही सोचा कि उनके कार्य को माता भवानी का आशीर्वाद है ।

यह धन स्वराज्य के काम आया । इस धन से शिवाजी महाराज ने शस्त्र खरीदे । बारूद इकट्‌ठा की । शेष धन से उन्होंने एक योजना पूरी करने का निश्चय किया । वह योजना थी -

तोरणा किले से पंद्रह किलोमीटर दूर पूर्व दिशा में मुरुंबदेव का पहाड़ है । शिवाजी महाराज ने उसे जाँच–परखकर रखा था । यह पहाड़ बहुत ऊँचा, दुर्गम तथा उपयुक्त स्थान पर था । आदिलशाह ने इस पहाड़ पर एक किला अधूरा बनाकर छोड़ दिया था । इस किले पर भी चौकस पहरा नहीं था । तब शिवाजी महाराज ने निश्चय किया कि स्वराज्य की राजधानी के लिए इस किले को अपने अधिकार में कर लेना चाहिए ।

स्वराज्य की पहली राजधानी : एक दिन शिवाजी महाराज ने अपने चुने हुए साथियों के साथ इस किले पर चढ़ाई की और उसे अपने अधिकार में कर लिया । तोरणा किले पर पाया हुआ कुछ धन मुरुंबदेव की मरम्मत में खर्च हुआ । शिवाजी महाराज ने इस किले का नाम 'राजगढ़' रखा । गढ़ पर कारीगरों ने पत्थर तराशे । लुहारों ने भट्ठी फूँकी । बढ़ई, मिस्त्री, मजदूर, भिश्ती जैसे लोग काम में जुट गए । राजमहल, बारह महल, अठारह कारखाने और सिंहासन तैयार हुए । स्वराज्य की पहली राजधानी के रूप में 'राजगढ़' सुशोभित हुआ ।

स्वराज्य का प्रसार : शिवाजी महाराज का अभियान प्रारंभ हुआ । उन्होंने बारह मावलों के सभी किले एक–एक करके जीत लिए । बारह मावल के गाँवों में आनंद और उत्साह की बाढ़ आ गई । गाँव–गाँव से पाटिल एवं देशमुख शिवाजी महाराज को उपहार देने के लिए आने लगे परंतु जैसे चावल में कुछ कंकड़ होते हैं उसी तरह इन मावलों में भी कुछ दुष्ट लोग थे । शिवाजी महाराज का उत्कर्ष देखकर उन्हें ईर्ष्या होने लगी । शिरवल के आदिलशाही थानेदार के पास शिवाजी महाराज के विरुद्ध शिकायतें की गईं । थानेदार ने बीजापुर को साँड़नीसवार भेजा और शिवाजी महाराज की इन बढ़ती गतिविधियों से आदिलशाह को अवगत कराया ।

राजगढ़ – पाली दरवाजा

शिवाजी महाराज का चातुर्य : इन बढ़ती गतिविधियों के बारे में सुनकर आदिलशाह चकित हो गया । उसने शहाजीराजे से स्पष्टीकरण माँगा । शहाजीराजे असमंजस में पड़ गए लेकिन उन्होंने किसी तरह स्थिति को संभाला और आदिलशाह को संदेश भेजा । 'जागीर की रक्षा के लिए अपने पास एक भी किला नहीं है; इसलिए शिवाजी ने यह किला लिया होगा ।' शिवाजी महाराज ने भी आदिलशाह के पास अपना दूत भेजा और उसके हाथों यह चतुराई भरा उत्तर भिजवाया, 'जागीर का कामकाज ठीक से चले इसलिए हमने यह किला लिया है । इसमें आदिलशाही की भलाई ही है । इसमें कोई दूसरा उद्देश्य नहीं है ।'

कोंढाणा और पुरंदर ये दोनों बड़े महत्त्वपूर्ण किले थे । शिवाजी महाराज ने बड़ी युक्ति से इन्हें अपने अधिकार में कर लिया । इसके बाद उन्होंने रोहिड़ा किले पर भी अधिकार किया । स्वराज्य का विस्तार जोरों से प्रारंभ हो गया ।

स्वाध्याय

१. कोष्ठक में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो :

(अ) शिवाजी महाराज को पुणे, सुपे, चाकण और .... प्रांतों की जागीर मिली थी ।
(इंदापुर, सासवड़, वेल्हे)

(आ) शिवाजी महाराज ने .... किला जीतकर स्वराज्य का तोरण बाँधने का निश्चय किया ।
(सिंहगढ़, शिवनेरी, तोरणा)

(इ) स्वराज्य की पहली राजधानी के रूप में .... सुशोभित हुआ ।
(राजगढ़, रायगढ़, प्रतापगढ़)

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) महाराष्ट्र में कौन-सी चार सत्ताएँ शासन कर रही थीं ?

(आ) शिवाजी महाराज ने तोरणा किले पर किन अधिकारियों को नियुक्त किया ?

(इ) शिवाजी महाराज ने आदिलशाह को क्या उत्तर भेजा ?

३. कारण बताओ :

(अ) स्वराज्य का तोरण बाँधने के लिए शिवाजी महाराज ने तोरणा किले को चुना ।

(आ) तोरणा किले में प्राप्त मुहरों के घड़े मजदूरों ने शिवाजी महाराज को लाकर दिए ।

उपक्रम

शिक्षकों की सहायता से अपने परिसर के किले की सैर का आयोजन करो ।